दादा भगवान परिवार का

जनवरी २०२०

शुल्क प्रति नकल :₹ २०/-

# अक्रम एक्सप्रेस

## यात्रा से जैकपॉट

# यात्रा से जैकपॉट

संपादकीय

बालमित्रों,

भगवान के दर्शन मंदिर में तो होते ही हैं, तो फिर इसके लिए यात्रा में जाने की क्या ज़रूरत है? इतनी सीढ़ियाँ चढ़ना, लाइन में खड़े रहना, कितनी सारी तकलीफों का सामना करना? यह प्रश्न मेरी तरह आपको भी सताता होगा न?

इस बार यात्रा करने सम्मेत शिखर जाने वाले हैं। तो चलो, इस अंक में हम यात्रा से संबंधित कई नई-नई बातें जानेंगे जो हमने कभी नहीं सुनी होंगी। उसमें भी ज्ञानी के साथ यात्रा करने जाना मिले तो यह तो महाभाग्य की बात है। इसीलिए यात्रा को जैकपॉट कहा है न!!!

तो आओ, यात्रा का महत्व जानें और ज्ञानी के साथ यात्रा का आनंद उठाएँ।

-डिम्पल भाई मेहता


अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ७ अंक : १०
अखंड क्रमांक : ८३
जनवरी - २०२०



संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org



Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.



© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

# ज्ञानी कहते हैं...

दादाश्री : इन सभी महात्माओं को दर्शन करने के लिए क्यों ले जाता हूँ? जो पहले गलतियाँ की हैं, उन गलतियों को माफ करवाने के लिए वहाँ लेकर जाता हूँ।

हर एक धर्मस्थल के अपने देवी-देवता होते हैं। यदि हमारा भाव बिगड़ता है न तो देवी-देवताओं को पता चल जाता है। और वे लोग कुछ दंड भी दे सकते हैं। एक बार यात्रा के दौरान एक भाई ने कुछ भाव बिगाड़े थे न, तो वे सीढ़ी से गिर पड़े। कुछ भी कारण नहीं था और गिर गए। सब छिल गया। तब दादा ने कहा कि कुछ विराधना की और उल्टा सोचा इसलिए देवी-देवताओं ने गिरा दिया।

किसी भी धर्मस्थल पर जाएँ तो उनके नियमों का पालन करना चाहिए। उनका नेगेटिव विचार भी नहीं करना चाहिए। उन पर हँसना नहीं चाहिए, उनका उल्टा नहीं बोलना चाहिए।

इस काल के मनुष्य पूर्व विराधक हैं। पूर्व विराधक अर्थात् किसी धर्म या धर्मगुरु के लिए उल्टा बोला हो। हमें देवी-देवताओं की आराधना इसलिए करनी है ताकि उनकी ओर से कोई "क्लेम" न रहे, हमें जाने दें और "हेल्प" करें। किसी का भी उल्टा नहीं बोलने से, नहीं देखने से, शासन देवी-देवता ही नहीं परंतु जीव मात्र के साथ अच्छा रहता है।

# यह तो नई ही

दादाश्री : एक बार पालीताणा में भगवान के देरासर में मैंने त्रिमंत्र बोला और फिर चावल वगैरह सब गिरे। जब लोगों के मन धर्म से दूर जाते हैं न तब देव लोग ऐसा करके भी उन्हें इस ओर मोड़ते हैं। श्रद्धा बिठा देते हैं।

यात्रा से पहले नीरू माँ खुद सभी महात्माओं के लिए नास्ता बनवाते। सेव-ममरा, चिवड़ा, पोपकॉर्न, बिस्किट, मूँगफली, ड्रायफ्रूट आदि सब छोटी-छोटी प्लास्टिक बैग में एक-एक के लिए पैक करवाते और सभी महात्माओं को देते, जिससे यदि गाड़ी देर-सबेर आए तो किसी को कोई तकलीफ न हो।

# बात है!

प्रश्नकर्ता : दादा, आपके पास बैठने से, आपने ऐसा कहा कि पूरे हिन्दुस्तान के सभी तीर्थ हैं, उन तीर्थों की यात्रा की हो, उस यात्रा करने से भी ज्यादा फल आपके पास बैठकर आपके दर्शन करने से होता है।

दादाश्री : अतः इसकी वैल्यू नापी जा सके ऐसा नहीं है। जितनी समझ उतना लाभ उठाते हैं।

एक बार यात्रा के दौरान नीरू माँ ने ट्रेन में सामायिक करवाई। जितने भी खिड़की में से दिखें उनके शुद्धात्मा देखना। डिब्बे में पिनड्रोप साइलेन्स हो गया। तब से सभी को शुद्धात्मा देखने की प्रैक्टिस शुरू हो गई।

१९७१ में करीब तीस महात्मा चार गाड़ियाँ लेकर दादा के साथ साउथ इन्डिया की यात्रा के लिए गए थे। रात के समय सभी तिरुपति बालाजी पहुँचे। उस समय किसी को पता नहीं था कि तिरुपति बालाजी के दर्शन के लिए सुबह चार बजे से लाइन लगना शुरू हो जाता है। सभी महात्मा आराम से सुबह नौ बजे दर्शन करने के लिए पहुँचे। पहुँचकर लंबी लाइनें देखकर पता चला कि दर्शन का नंबर आने में तो रात हो जाएगी। किसी ने बताया कि प्रति व्यक्ति सौ रुपये देने से जल्दी दर्शन हो सकते हैं। दादा ने जब यह बात सुनी तब दादा ने कहा,"रिश्वत देकर दर्शन नहीं करने चाहिए। और वैसे भी तीस लोगों के दर्शन के लिए तीन हज़ार खर्च किए जाते होंगे?" हम ऐसा करते हैं, हम यहाँ बैठते हैं और तिरुपति बालाजी को बाहर बुलाते हैं!"

दादा के कहे अनुसार एक पेड़ के नीचे सफाई करके पूजा का सामान रखा। दादा ने वहाँ विधि की और ज़ोर से बोले, "तिरुपति बालाजी की जय हो! करो दर्शन सभी!" और सभी को तिरुपति बालाजी के एक्ज़ेक्ट दर्शन हुए। सभी महात्माओं ने दादा के साथ भक्ति पद गाए और बहुत आनंद किया।

रात को सभी महात्मा एक होटल में डिनर के लिए गए। वहाँ तिरुपति बालाजी ट्रस्ट के चीफ इंजीनियर ने दादा को देखा। दादा के गले में हार देखकर, उन्होंने एक महात्मा से दादा का परिचय माँगा। महात्मा ने दादा की पहचान करवाई। और साथ ही साथ दादा ने मंदिर के बाहर जो तिरुपति बालाजी के अलौकिक दर्शन करवाए थे वो दर्शन की भी बात कही। वे इंजीनियर तो आश्चर्यचकित हो गए। उन्हें लगा कि इन सभी महात्माओं को बालाजी के ठीक से दर्शन होने ही चाहिए। उन भाई ने सब अरेंजमेन्ट करवाया और दादा के साथ महात्माओं को तिरुपति बालाजी के गर्भगृह में ले जाकर शांति से दर्शन करवाए।

इस तरह महात्माओं को आनंद उल्लासपूर्वक दोनों दर्शन प्राप्त हुए।

देखा मित्रों, दादाश्री के सान्निध्य का असर!

# तिरुपति बालाजी को बाहर बुलाते हैं!

# यात्रा का हेतु

जिन-जिन क्षेत्रों में जाते हैं वहाँ के परमाणु हमें असर करते हैं। जैसे यदि कुरुक्षेत्र में जाएँ तो नहीं झगड़ना हो तो भी हम झगड़ने लगते हैं। इसी तरह भगवान जहाँ-जहाँ विचरे हैं वहाँ-वहाँ भगवान के परमाणु होते हैं। इसलिए यदि उस क्षेत्र में जाते हैं तो हमें शांति लगती है। भक्ति आराधना के भाव जागते हैं। इसलिए यात्रा में जाना चाहिए।

जैन वैष्णव के मंदिर में नहीं जाते, वैष्णव जैनों के मंदिर में नहीं जाते। यानि किसी एक धर्म के लोग दूसरों के धर्मस्थान में नहीं जाते। गाँठ पड़ गई होती है। वीतराग भगवान को ऐसा वैसा कुछ नहीं होता, इसलिए दादा सब जगहों पर लेकर जाते थे। हिन्दुओं के मंदिर में, मुसलमानों की मस्जिद में, सिख के गुरुद्वारे में, क्रिश्चियन के चर्च में। अनंत जन्मों में जाने-अन्जाने किसी भगवान के लिए हमारे भाव बिगड़ गए हों, विराधनाएँ हो गई हो तो इन सभी को धोने के लिए हमें यात्रा में जाना चाहिए। क्योंकि अब हमें मोक्ष जाना है इसलिए सबसे माफी माँगकर शुद्ध हो जाना चाहिए।

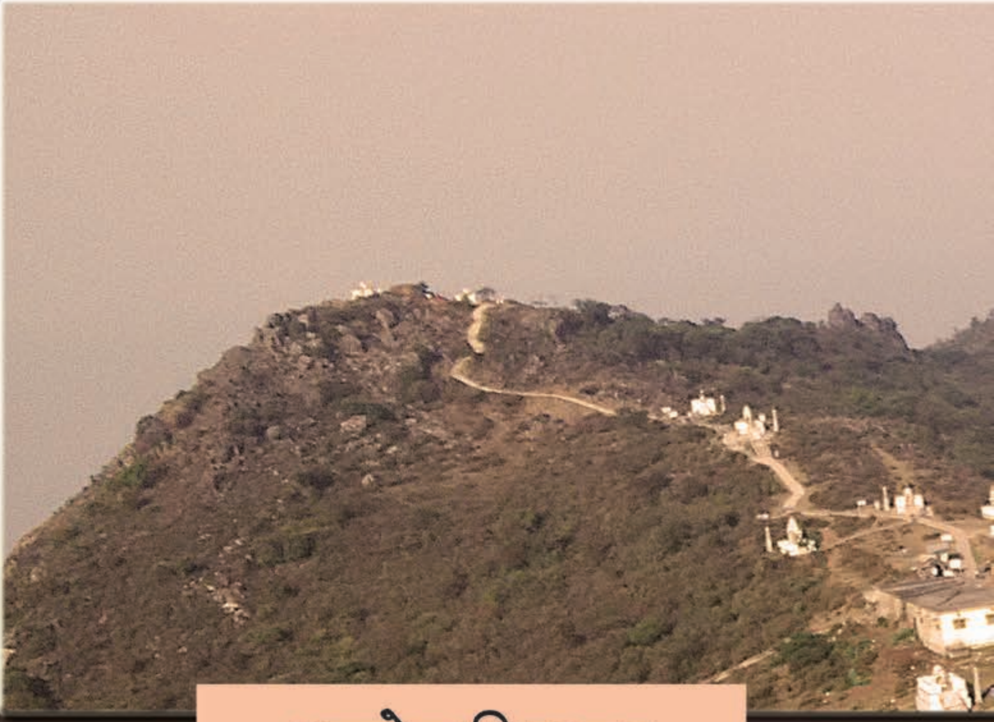

# सम्मेत शिखर

१९७७-७८ में दादा सभी महात्माओं को सम्मेत शिखर की यात्रा पर ले गए थे। इस यात्रा के दौरान दादा एक-एक महात्मा के साथ अकेले बैठे। एक-एक महात्मा ने सारी ज़िंदगी में हुई अपनी भूलों को दादा के सामने ज़ाहिर करके पश्चाताप किया था। दादा ने हर एक को उन भूलों में से वापस लौटने का उपाय दिखाया था। किसी को सख्ती से तो किसी को समझाकर। किसी को उनकी नहीं दिखने वाली भूलें दिखाकर। ज्ञानी के टच में आने से यह होता है। ज्ञानी से दूर रहते हैं तो ऐसा नहीं होता है। यह है यात्रा का फल।

यात्रा को जैकपॉट क्यों कहा गया है? ज्ञानी के नज़दीक जा सकते हैं। ज्ञानी के नज़दीक रहने से वे अपने लगने लगते हैं। और तब आलोचना(गलती को ज़ाहिर करना) हो सकती है न। वर्ना भूल होती रहती है, खटकती है लेकिन कह नहीं पाते। लेकिन नज़दीक आने से हिम्मत आती है और आलोचना कर सकते हैं और मुक्ति हो सकती है।

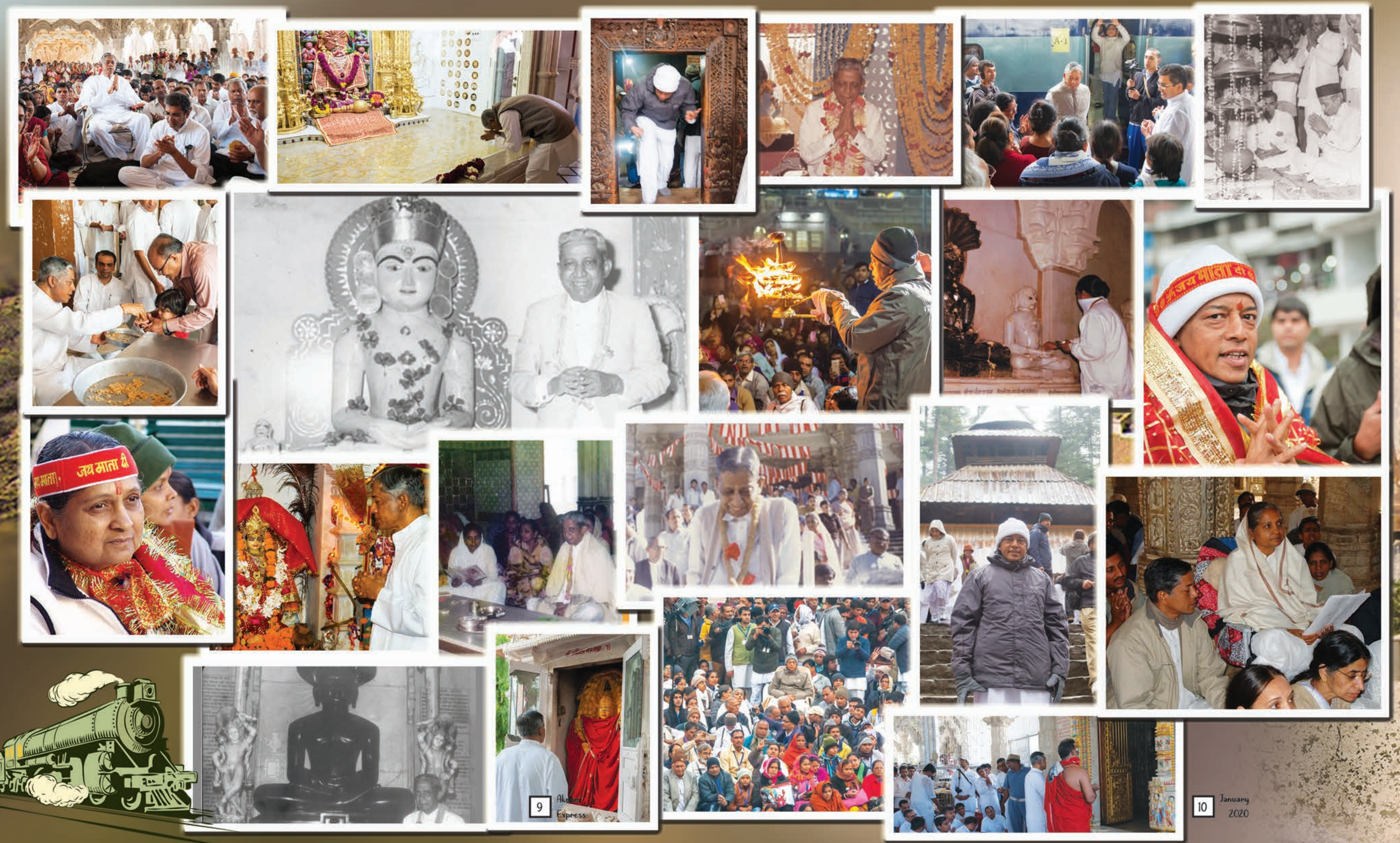






# यात्रा से जैकपॉट

श्री सम्मेत शिखर जी, भारत के झारखंड राज्य में आने वाला जैनों का एक महत्वपूर्ण यात्रा स्थल है। इस यात्रा स्थल की महत्वता यह है कि वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों में से बीस तीर्थंकर भगवंत ने यहाँ से निर्वाण प्राप्त किया है। उन सभी की स्मृति में यहाँ मंदिर बनाए गए हैं।

समय के साथ मंदिर जीर्ण होने लगे। इसलिए परमात्मा के मूल निर्वाण स्थल का पता नहीं चलता था। बार-बार वहाँ दर्शन के लिए आने वाले जगतसेठ खुशालचंद ने मंदिरों की ऐसी हालत देखी। उन्होंने श्री देवविजय जी गणि की प्रेरणा से अट्ठम (तीन उपवास) तप की आराधना की। तीर्थ का नवनिर्माण करवाने के आशय से की गयी तपश्चर्या के फल स्वरूप पद्मावती देवी ने स्वप्न में बताया कि "जहाँ केसर के स्वस्तिक दिखें उन निश्चित स्थलों को भगवान का निर्वाण स्थान समझना। कौन से तीर्थंकर का निर्वाण स्थान कौन सा है, वह उस स्थान पर कुदरती रूप से बने स्वस्तिक की संख्या के आधार पर तप करना।"

शासनदेवी के आदेशानुसार बीस तीर्थंकरों के कल्याणक् के निश्चित स्थान तय किए गए हैं। उसके अनुसार मंदिर बनाकर उनमें भगवान की चरण पादुका की स्थापना की गई है।

यहाँ पर भोमियाजी के दर्शन करके यात्रा शुरू की जाती है। पहाडी पर अभी ३१ टोंक है। जिनमें से २० तीर्थंकर भगवान के हैं, जिन्होंने यहाँ से मोक्ष प्राप्त किया। उनकी स्मृति रूप में उस स्थल पर उनकी पादुकाजी की स्थापना की गई है।

वर्तमान चौबीसी के श्री ऋषभदेव भगवान, श्री वासुपूज्य भगवान, श्री नेमिनाथ भगवान और श्री महावीर भगवान के अलावा, बीस तीर्थंकर श्री सम्मेत शिखर पहाड़ से मोक्ष गए हैं।

# यात्रा का हेतु

ज्ञानी के साथ यात्रा करने से उनकी दिनचर्या नज़दीक से देखने मिलती है कि ज्ञानी किस तरह सो जाते हैं, किसी तरह खाते हैं, किस तरह उठते-बैठते हैं, किसके साथ किस तरह बातें करते हैं। उनकी सहजता, सरलता, वीतरागता, कैसी खटपट करते हैं। यह सब देखने मिलता है।

दादा हमेशा कहते थे कि जब आप हमें देखते हो तब वह शक्ति आपमें उत्पन्न हो जाती है। कोई हमें कच्चा-पक्का खाने के लिए दे जाता है, वह हमने शांति से खा लिया, ज्ञानी इतनी ऊँची स्टेज पर होते हुए भी हमारे जैसे बनकर रहते हैं, वह जब आप देखते हो तब वह शक्ति आपमें उत्पन्न हो जाती है।

एडजस्टमेन्ट लेना सीखने के लिए, सब से बड़ा प्रसंग अर्थात् यात्रा। टाइम से खाना नहीं मिले, सोने नहीं मिले, कभी टाइम से पहुँचने पर आगे का टाइमटेबल बदल जाता है, चाहे जैसा भी रहना-खाना मिलता है तब एडजस्टमेन्ट लेना सीख जाते हैं। अपने घर में तो अपना ही पलंग, अपना ही तकिया, अपनी ही चद्दर, अपनी ही जगह इसलिए दिक्कत नहीं होती। यात्रा में चाहे जैसा भी मिलता है, तब महात्मा एकदूसरे को देखकर भी एडजस्टमेन्ट कर लेते हैं, कोई और महात्मा किसी और तरीके से एडजस्टमेन्ट करता है, इसलिए दूसरों को देखकर हमें भी सूझ पड़ती जाती है।

# अच्छी समझ का लाभ!

सन् १९६९ की बात है। एक बार दादा चार-पाँच महात्माओं के साथ मेहसाणा सीमंधर स्वामी के मंदिर गए थे। दर्शन करने के बाद वे वहाँ की भोजनशाला में खाना खाने गए। उस दिन खाने में दो परत वाली रोटी थी। एक महात्मा ने दो परत वाली रोटी कभी खाई नहीं थी इसलिए वह रोटी देखकर उन्होंने दादा से कहा, "दादा, रोटी कच्ची लग रही है।"

यह सुनकर तुरंत ही दादा मुँह पर ऊँगली रखकर बोले, "चुप। किसी भी तीर्थ स्थल में भोजन व्यवस्था की कमी नहीं निकालनी चाहिए या अवगुण नहीं बोलना चाहिए। देव लोग नाराज़ हो जाते हैं।"

उस दिन से वह महात्मा सीख गए। जब जब यात्रा में जाते या किसी मंदिर के प्रतिष्ठा महोत्सव में जाते या किसी भी धर्मस्थल में जाते और भोजन में कच्चे चावल या ओसामण मिले तो कभी कुछ बोले नहीं है। जिस समय जो प्राप्त हुआ वह खा लेना।

# कुछ नया जानेंगे...

धर्म - ईसाई
मुख्य तीर्थ स्थल : बेथलेहम, जेरूसलेम, वैटिकन सिटी

*जेरूसलेम - इज़राइल*

*जेरूसलेम, यहूदी, ईसाई और इस्लाम तीनों धर्मों के लिए महत्व रखता है। ईसु मसीह को इस शहर में स्तंभ पर चढ़ाया गया था और यही उनका देहांत हुआ था।*

*बेथलेहम - पेलेस्टीन*

*ईसा मसीह का जन्म बेथलेहम में हुआ था।*

बेथलेहम

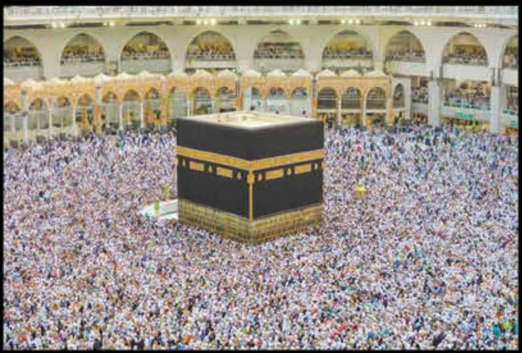

मक्का

धर्म - इस्लाम
मुख्य तीर्थ स्थल : मक्का, मदीना, जेरूसलेम

*मक्का - सउदी अरेबिया*

*इस्लाम धर्म में मक्का शहर में स्थित काबा को सब से पवित्र स्थल माना जाता है। यहाँ इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद साहिब का जन्म हुआ था। मक्का की यात्रा को इस्लाम धर्म में "हज" कहा जाता है।*

धर्म - सिख
मुख्य तीर्थ स्थल : गोल्डन टेम्पल, अमृतसर

*सेवा को प्रोत्साहन देने वाला यह पवित्र धार्मिक, समानता और शांति का संदेश फैलाता है। हर रोज़ पचास हज़ार से ज्यादा लोगों को इस मंदिर की रसोई से मुफ्त भोजन खिलाया जाता है।*

गोल्डन टेम्पल

## धर्म - जैन
### मुख्य तीर्थ स्थल : श्री सम्मेत शिखरजी, पालीताणा

पालीताणा

*पालीताणा*

*वर्तमान चौबीस में से तेईस तीर्थंकर पालीताणा आए थे। पालीताणा के पहाड़ों पर ३००० से भी ज्यादा छोटे बड़े मंदिर है!*

*श्री सम्मेत शिखर जी*

*बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि और सैकड़ों साधकों की साधना भूमि अर्थात सम्मेत शिखर।*

## धर्म - बौद्ध
### मुख्य तीर्थ स्थल - बोधगया, सारनाथ

*बोधगया - बिहार*

*महान सम्राट अशोक ने सब से पहले इस जगह पर मंदिर की स्थापना की थी। इस मंदिर में अलग-अलग राष्ट्रीयता वाले, अलग-अलग संस्कृतियों में पले बढ़े हज़ारों श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं।*

सारनाथ

सोमनाथ

## धर्म - हिन्दू
### मुख्य तीर्थ स्थल - वाराणसी, सोमनाथ, रामेश्वरम्

*वाराणसी - उत्तर प्रदेश*

*वाराणसी में गंगा नदी के किनारे कई प्रसिद्ध मंदिर है। काशी विश्वनाथ मंदिर, शिव भगवान के बारह ज्योतिर्लिंग मंदिरों में मुख्य मंदिर है।*

## धर्म : हिन्दू
### मुख्य तीर्थ स्थल - मथुरा, पुरी, द्वारिका, तिरुपति

*मथुरा*

*भगवान कृष्ण की जन्मभूमि की तरह से पहचानी जाने वाली मथुरा नगरी और नज़दीक में ही स्थित वृंदावन कई मंदिरों की भूमि है।*

*तिरुपति*

*तिरुपति के नज़दीक में स्थित तिरुमाला वेंकटेश्वर धाम भारत के सब से पवित्र तीर्थ में से एक है। यहाँ भगवान वेंकटेश्वर का मंदिर है।*

तिरुपति

# धन्य ये दिन मेरे!

यह बात १९९५-९६ की है। महात्माओं के लिए पूज्यश्री और नीरू माँ के साथ राजस्थान यात्रा का आयोजन किया गया था। उस यात्रा में मुझे जीवन का सब से अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ। नीरू माँ ने मुझे दीपक भाई का सामान उठाने की सेवा सौंपी थी। वह सेवा करते-करते मैंने पूज्यश्री के ऐसे ज़बरदस्त एडजस्टमेन्ट देखे कि वे घटनाएँ मेरे हृदय में अंकित हो गई और आज भी मेरी स्मृति में उतनी ही ताज़ी हैं।

हम सभी नाकोडा पहुँचे। सभी महात्माओं के रहने का इंतज़ाम किया जा रहा था। एक रॉयल होटल में नीरू माँ के रहने का इंतज़ाम किया गया था और एक छोटी सी जगह पर अन्य आप्तपुत्रों के साथ में पूज्यश्री के रहने की व्यवस्था की गई थी। उस दिन संयोगानुसार तीन बार पूज्यश्री का रूम बदला गया। तीन बार सामान के साथ कमरा बदलना पड़ा। लेकिन पूज्यश्री के चेहरे की रेखा बिल्कुल भी नहीं बदली। पूज्यश्री की सरलता और एडजस्टमेन्ट लेने की

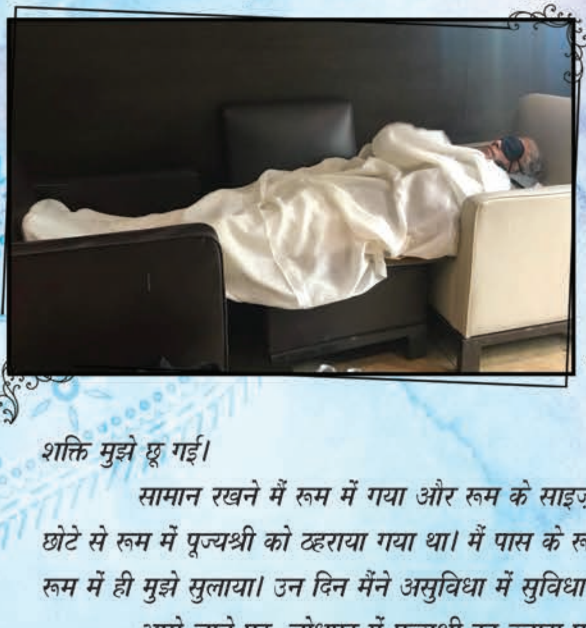

शक्ति मुझे छू गई।

सामान रखने में रूम में गया और रूम के साइज़ को देखकर मुझे झटका लगा। करीब दस बाई आठ फूट के छोटे से रूम में पूज्यश्री को ठहराया गया था। मैं पास के रूम में सोने गया तब पूज्यश्री ने प्रेम से आग्रहपूर्वक अपनी ही रूम में ही मुझे सुलाया। उन दिन मैंने असुविधा में सुविधा करने का सुंदर ढंग पूज्यश्री को देखकर सीखा।

आगे जाने पर, जोधपुर में पूज्यश्री का उतारा एक महात्मा के महल जैसे घर में ठहराया गया। छोटी सी जगह में पूज्यश्री की जो स्थिति थी वह विशाल जगह में भी वैसी ही थी। मैंने देखा कि उस छोटे से रूम में पूज्यश्री के चेहरे पे जैसा आनंद था वैसा ही आनंद यहाँ भी था।

यात्रा के दिनों में मैं पूज्यश्री के सान्निध्य में अपने जीवन का पाठ सीखकर धन्य हो गया।

# 75 years BIRTHDAY CELEBRATION

*forever sweet sixteen*

Akram Express

January 2020
Year : 7, Issue : 10
Conti. Issue No.: 83

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

# और अंत में...

अलास्का की बात है। नीरू माँ करीब दो सौ महात्माओं के साथ पंद्रह दिन की यात्रा पर क्रूज़ में गए थे। जैसे ही क्रूज़ चला कि पंद्रह मिनिट में नीरू माँ ने उनके साथ के ब्रह्मचारी भाई से कहा, "हम वापस लौट जाएँ? पंद्रह दिन क्रूज़ में क्या करेंगे?"

ब्रह्मचारी भाई तो चौंक गए। उन्होंने कहा, "नीरू माँ, अब कुछ नहीं हो सकता। पैसे भर दिए गए हैं और क्रूज़ चल दिया है।"

नीरू माँ चुप हो गए।

उन भाई से पूछा, "क्या हुआ नीरू माँ? क्यों लौटने की बात कर रहे हो?"

नीरू माँ ने खूब करुणा के साथ जवाब दिया, "पंद्रह दिन यहाँ क्रूज़ में ऐसे ही रहना है। इतने दिन सत्संग नहीं होगा, जगत् के लोग ज्ञान प्राप्त करने से वंचित रह जाएँगे।"

लेकिन कुछ हो सके ऐसा नहीं था। अंत में यात्रा तो पूरी की लेकिन नीरू माँ पूरी यात्रा के दौरान संपूर्ण वीतराग रहे थे। महात्माओं को आनंद करवाते लेकिन उन्हें उसका दुःख था कि दुनिया के कितने लोग सत्संग और ज्ञान से वंचित रह गए।

ज्ञानी की ऐसी करुणा और वीतरागता यात्रा में देखने मिली।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर स्रूर करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

*Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation*
*Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025*